ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

वर्ष 46 | अंक 26 | पृष्ठ 08 | दयानन्दाब्द 200 | एक प्रति ₹ 5 | वार्षिक शुल्क ₹250 | सोमवार, 22 मई, 2023 से रविवार 28 मई, 2023 | विक्रमी सम्वत् 2080 | सृष्टि सम्वत् 1960853124 |
दूरभाष/ 23360150 | ई-मेल/ aryasabha@yahoo.com | इन्टरनेट पर पढ़े/ www.thearyasamaj.org/aryasandesh

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती के आयोजनों की श्रृंखला

2 वर्षीय ज्ञान ज्योति महोत्सव

कार्य योजनाओं की तैयारी हेतु

केंद्रीय आयोजन समिति की बैठक संपन्न

संपूर्ण विश्व में ऐतिहासिक रूप से सफल होंगे दो वर्षीय आयोजन –सुरेंद्र कुमार आर्य

महर्षि दयानंद की शिक्षाओं एवं वर्तमान चुनौतियों को घर-घर तक पहुंचाएंगे आर्यजन –सुरेश चंद्र आर्य

मानव सेवा और राष्ट्र निर्माण के कार्यों को तीव्रगति से आगे बढ़ाएगा, आर्य समाज –धर्मपाल आर्य

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती और आर्य समाज के 150वें स्थापना दिवस को लेकर संपूर्ण आर्य जगत में अत्यंत उमंग उत्साह और उल्लास का वातावरण है। आर्यजनों के इस उत्साह में और अधिक वृद्धि तब उत्पन्न हो जाती है जब

ज्ञान ज्योति महोत्सव को लेकर केन्द्रीय आयोजन समिति की बैठक में उपस्थित समिति के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी को 200वीं जयंती का प्रतीक चिन्ह भेंट करते हुए सर्वश्री सुरेश चन्द्र आर्य, धर्मपाल आर्य एवं विभिन्न प्रांतीय सभाओं के अधिकारीगण, द्वितीय चित्र में अध्यक्ष जी का पुष्प गुच्छ भेंटकर स्वागत करते हुए ओमप्रकाश आर्य, विद्यामित्र ठुकराल, मध्य में विचार विमर्श करते हुए केन्द्रीय आयोजन समिति के अधिकारी तथा प्रांतीय सभाओं के अधिकारीगण व सार्वदेशिक सभा के प्रधान जी का स्वागत करते हुए धर्मपाल आर्य एवं सुरेन्द्र कुमार आर्य

समय समय पर आर्य समाज का शीर्ष नेतृत्व, केंद्रीय आयोजन समिति, प्रांतीय सभाएं और आर्य नेतागण योजनाबद्ध तरीके से आगामी दो वर्षीय आयोजनों को लेकर परस्पर संपूर्ण विचार विमर्श करके निष्कर्ष पर पहुंचते हैं और महर्षि दयानंद सरस्वती जी की शिक्षाओं को और आर्य समाज के प्रचार-प्रसार को जन-जन तक पहुंचाने का निर्णय लेते हैं। आज आर्य समाज का शीर्ष नेतृत्व, हर स्तर पर अधिकारी, कार्यकर्ता और सदस्यगण एक नई ऊर्जा के साथ महर्षि के मिशन को आगे बढ़ाने के लिए पूरी शक्ति और सामर्थ्य के साथ तत्पर हैं।

21 मई 2023 को आर्य समाज 15, हनुमान रोड़ के सभागार में महर्षि दयानंद सरस्वती की 200वीं जयंती और आर्य समाज के 150वें स्थापना दिवस के आगामी दो वर्षीय आयोजनों को लेकर केंद्रीय आयोजन समिति के माननीय अध्यक्ष श्री सुरेंद्र कुमार आर्य जी की अध्यक्षता में, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेश चंद्र आर्य जी के नेतृत्व में, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी की गरिमामयी उपस्थिति में आर्य

केन्द्रीय आयोजन समिति के आगामी कार्यक्रम

- कश्मीर से कन्याकुमारी तक होगा ज्ञान ज्योति यात्रा का भव्य आयोजन
- आर्य समाज के 350 महापुरुषों की जीवनी, सेवाकार्यों का होगा सृजन
- 400 परिवारों को चारों वेदों के मंत्र कंठस्थ कराके बनाया जाएगा वेद परिवार
- 10 लाख विद्यार्थियों की महर्षि दयानंद कॉमिक्स प्रतियोगिता के आयोजन सत्यार्थ प्रकाश स्वाध्याय एवं समूह गान प्रतियोगिताओं के आयोजन
- आर्य समाज के शेष इतिहास को विधिवत किया जाएगा निर्मित

प्रांतीय सभाओं के सुनिश्चित कार्यक्रम

- अपने राज्य में ज्ञान ज्योति यात्रा के स्वागत और मार्गों का करें निर्धारण
- प्रत्येक प्रांतीय सभा अपने राज्य में ज्ञान ज्योति पर्व का करें भव्य आयोजन
- राज्य सरकारों के सभी अधिकारियों को अपने कार्यक्रमों में करें आमंत्रित
- महर्षि दयानंद सरस्वती की दो 200वीं जयंती पर अवकाश घोषित कराएं
- सार्वजनिक एवं विशिष्ट स्थानों का महर्षि के नाम पर कराएं नामकरण
- महर्षि की तपस्थलियों को प्रेरणा स्थली के रूप में प्रसिद्ध कराएं
- 750 दिनों में 200 लोगों को आर्य समाज से जोड़ने का रखेंगे लक्ष्य
- 100 लोगों से 1000 तक पहंचने वालों को शतकवीर, सहस्रवीर सम्मान
- 52 साप्ताहिक सत्संगों में महर्षि दयानंद की जीवनी (दयानंद प्रकाश) का करें स्वाध्याय, आर्य समाज के इतिहास के 52 अध्यायों का करें स्वाध्याय
- मेरी पहचान आर्य समाज, मेरा परिवार आर्य परिवार को चरितार्थ करने के लिए आर्यजन लें संकल्प

प्रतिनिधि सभा, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, महाराष्ट्र, गुजरात, हिमाचल, जम्मू-कश्मीर, बिहार, झारखंड, उत्तराखंड, चेन्नई इत्यादि सभाओं के प्रधान, मंत्री और अन्य अधिकारी, कार्यकर्ता और सदस्यों ने आगामी कार्यक्रमों को सफल बनाने और विश्व स्तर पर आर्य समाज और महर्षि दयानंद सरस्वती की शिक्षाओं का प्रचार-प्रसार करने कराने का संकल्प लिया।

गायत्री और ईश्वर स्तुति, प्रार्थना, उपासना मंत्रों के उच्चारण के साथ बैठक का आरंभ हुआ। सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेश चंद्र आर्य जी ने उपस्थित अधिकारियों का अभिनंदन करते हुए अध्यक्ष श्री सुरेंद्र कुमार आर्य जी का पीत वस्त्र से स्वागत किया, दिल्ली सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने पुष्पगुच्छ भेंट कर अध्यक्ष जी, सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेश चंद्र गुप्ता जी का अभिनंदन किया। सभा के उपप्रधान श्री अरुण प्रकाश वर्मा जी, श्री ओमप्रकाश आर्य जी, मंत्री श्री वीरेन्द्र सरदाना जी, श्री सुखवीर सिंह आर्य जी इत्यादि महानुभावों ने सभी सभाओं के अधिकारियों का पीत वस्त्र से स्वागत किया। श्री सुरेश चंद्र आर्य जी के स्वागत भाषण के साथ कार्यवाही आरंभ हुई, जिसमें उन्होंने 12 फरवरी और 21 मार्च की उपलब्धियों का सारगर्भित वर्णन करते हुए भविष्य के आयोजनों की भव्यता

- शेष पृष्ठ 3 पर

वेदवाणी-संस्कृत

साधना और तपस्या से जगत में चमत्कार

वेद-स्वाध्याय

देवान् यन्नाथितो हुवे ब्रह्मचर्य यदूषिम।
अक्षान् यद् बभ्रूनालभे ते नो मृडन्त्वीदृशे।।
-अथर्व० 7 । 109 । 7
ऋषिः-बादरायणिः।। देवता-अग्निः।। छन्दः-अनुष्टुप्।।

शब्दार्थ- **यत्**=जो **नाथितः**=उपतप्त हुआ मैं **देवान्**=देवों को **हुवे**=पुकारता हूँ **यत्**=जो **ब्रह्मचर्यम्**=मैंने ब्रह्मचर्य को **ऊषिम**=बसा है, पालन किया है और **यत्**=जो **बभ्रून**=हरण करने वाली **अक्षान्**=इन्द्रियों को **आलभे**=सब ओर से काबू किया है **ते**=मेरे ये सब कर्म **ईदृशे**=ऐसे विकट समय में **नः**=मुझे **मृडन्तु**=सुखी करें, जय प्राप्त कराकर सुखी करें।

विनय- हे प्रभो! बड़ा विकट समय उपस्थित है। मैं इस वर्तमान दुरवस्था को कैसे दूर करूँ? मेरा इसमें कुछ बस नहीं चलता। मुझे हार-पर-हार खानी पड़ रही है। जिन लोगों ने यह दुरवस्था उत्पन्न की है वे मेरे सब न्यायोचित यत्नों को अपने अन्यायपूर्ण दुष्कृत्यों द्वारा निष्फल करते जा रहे हैं। मैं इस समय क्या करूँ? जो मैं उपतप्त होकर आज देवताओं का आह्वान कर रहा हूँ, पुकार रहा हूँ, क्या मेरा यह सब यत्न भी व्यर्थ जाएगा? क्या इस समय ये देव लोग भी आकर मेरी मदद नहीं करेंगे? जो मैंने अब तक ब्रह्मचर्य का उग्र, कठोर व्रत पालन किया है, क्या वह मेरा ब्रह्मचर्य-तप भी इस दुरवस्था को पलट न सकेगा? जो मैंने सबको हरण करने वाली, विद्वानों को भी खींचने वाली, दुर्दम इन्द्रियों को सब ओर से काबू किया है वह मेरी संयम की शक्ति भी क्या मुझे आज जय-लाभ न करा सकेगी? ओह, मेरे ये सब यत्न यदि ऐसे समय पर भी मेरे काम न आएँगे तो और कब आएँगे? यह देखो, दूसरे लोग मुझपर हँस रहे हैं, वे सचमुच समझ रहे हैं कि देवों का आह्वान, ब्रह्मचर्य की तपस्या और इन्द्रियनिग्रह व्यर्थ की चीजें हैं, निरर्थक ढकोसले हैं। इसलिए हे प्रभो! अब तो ऐसा करो कि मेरे ये सब पुण्य कर्म मेरे ये देवाह्वान, ब्रह्मचर्य, संयम आदि सब पुण्य प्रयत्न मुझे सुखी कर देवें, विजय प्राप्त कराकर मुझे सुख पहुँचाने के कारण हों। अब तो ऐसा कर दो कि इन दिव्य शक्तियों का चमत्कार एक बार फिर जगत् में प्रकट हो जाए। हे प्रभो! मैं तुमसे और क्या कहूँ? इस समय और क्या माँगू?

-:साभार:- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

संपादकीय

मजारों के लिए जगह है, हिन्दुओं के घरों के लिए नहीं?

पाकिस्तानी हिंदू शरणार्थियों की झोपडियों पर प्रहार और बंगलादेशी रोहिंग्याओं के लिए फ्लैट- ये कैसा न्याय?

“अगर इसमें पाकिस्तान को देखें तो पाकिस्तान बनने के बाद जब पहली बार जनगणना की गई थी तो उस समय पाकिस्तान की तीन करोड़ चालीस लाख आबादी में से करीब 20 प्रतिशत गैर-मुसलमान थे। मगर आज पाकिस्तान के करीब 20 करोड़ नागरिकों में गैर-मुसलमानों की सूची में अहमदी समुदाय को शामिल कर लिए जाने के बावजूद वहां गैर-मुसलमानों की आबादी 2 से 3 फीसदी में बची है। यानि पाकिस्तान का हिंदू न घर का है न घाट का। वहां धर्म बदलने की मजबूरी, यहां रोजी-रोटी और न जाने कब खदेड़ दिए जाने का खतरा हर समय मंडराता है। और सवाल बन जाता है कि इस देश में हिन्दुओं के लिए एक छोटे से झोपड़े के लिए जगह नहीं है बाकि सड़क के ऊपर-नीचे बीच में चौराहों पर मजार बन सकती है लेकिन किसी हिन्दू के लिए घर नहीं क्योंकि यहाँ तो चिलचिलाती धूप में उनके सिर से छत छीन लेते हैं।”

जैसे तैसे करके पाकिस्तान से कुछ हिन्दू अपना धर्म बचाकर राजस्थान के जैसलमेर पहुंचे थे। जान बचाकर हम नहीं कहेंगे, क्योंकि जान तो इस्लाम अपनाकर भी बच जाती लेकिन बात धर्म की थी। यहाँ आकर अपने अस्थाई झोपडीनुमा घर बनाएं। अब टाइम्स ऑफ इंडिया की खबर के अनुसार, जैसलमेर की जिलाधिकारी टीना डाबी ने आदेश जारी किया, जिसके बाद जिला प्रशासन ने इन अस्थाई घरों को ध्वस्त कर दिया। बताया जा रहा है कि जिला प्रशासन ने जबरन उन्हें उनके घर से बेदखल किया और विरोध करने पर महिलाओं के खिलाफ निर्दयी तरीके से बल प्रयोग भी किया। प्रशासन की इस कार्रवाई में तीन महिलाओं को गंभीर चोटें आई हैं और उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

ये हिंदुस्तान है इसी हिंदुस्तान का राज्य राजस्थान है। जहाँ अजमेर की एक कब्र पर रोजाना लाखों चादर चढाई जाती हैं पर पाकिस्तानी हिन्दुओं के घर के ऊपर से तिरपाल छीन ली जाती है। अब प्रसाशन कह रहा है कि कुछ दिनों से अमरसागर गांव के सरपंच और अन्य स्थानीय निवासियों की तरफ से शिकायतें मिल रही थीं कि प्रवासी हिंदुओं ने राज्य सरकार की 'शहरी सुधार ट्रस्ट' की जमीन पर अवैध तरीके से अपनी बस्तियां बसा ली हैं तो वो उजाड़ दी। लेकिन सवाल है कि अगर ये बस्तियां मुसलमानों की होती तो क्या राज्य सरकार यही एक्शन लेती?

ये सवाल इस कारण से भी है कि दिल्ली की शांति पर भारी पड़ रहे बांग्लादेशी-रोहिंग्या शरणार्थीयों के लिए यहाँ फ्लैट बनाये जाते हैं। ऐसा हम नहीं बल्कि पिछले दिनों न्यूज़ पोर्टल मिंट में छपी एक खबर में बताया गया था। ये फ्लैट बांग्लादेशी-रोहिंग्या शरणार्थीयों के लिए थे जो अमर उजाला में छपी एक खबर के अनुसार जो अपराध को 'रोजगार के माध्यम' की तरह देखते हैं, वाहनों की चोरी करना, उसके टुकड़े कर कबाड़ी की दुकानों पर बेचना और अन्य छोटे-मोटे अपराध करना उनके लिए पेशे के जैसा होता है।

इसके बाद जब न्यूज़ ऑन करो तो हिन्दूओं पर बहस होती है। कोई सबसे बड़ा सवाल पूछता है तो कोई ताल ठोकता है। सोशल मीडिया पर जाओ हर तीसरी पोस्ट में हिन्दुओं की बात होती है। इसके अलावा अगर राजनितिक गलियारों से बयानों का टोकरा भरा जाये तो हिन्दू, हिन्दू, हिन्दू कहीं हनुमान चालीसा तो कोई अखंडपाठ पर राजनितिक कुश्ती हो रही है। लेकिन जैसे ही खबर आती है कि भारत की नागरिकता पाने के मक़सद से राजस्थान में रह रहे करीब 800 पाकिस्तानी हिंदू वापिस लौट गए तब सन्नाटा छा जाता है।

आज बात किसी सरकार की नहीं, ना आज बात किसी नेता की। आज बात सिर्फ उन हिन्दुओं की जिन्हें हिंदुस्तान में आकर सब प्रमाणपत्र दिखाकर भी नागरिकता नहीं मिल पाती और बांग्लादेश से अवैध रूप से बंगलादेशी यहाँ नागरिकता पा जाते है। म्यांमार से आकर रोहिंग्या मुस्लिम देश की राजधानी से लेकर मुंबई तक और श्रीनगर तक बस जाते हैं। इस देश में हजारों अफगानियों को शरण मिल जाती है, लेकिन अगर दुर्भाग्य से इन देशों से कोई हिन्दू आ जाये तो उनके साथ क्या होता है। थोड़े समय पहले की बात है 500 पाकिस्तानी हिन्दू भारत में शरण लेने आए थे। परंतु लम्बी अवधि का वीजा नहीं मिलने के कारण उन्हें पाकिस्तान लौटना पड़ा था। जब ये 500 हिन्दू पाकिस्तान गये तो वहां पहुंचकर इनके सामने एक ही विकल्प बचा था कि दुबारा वहां रहने के लिए मुस्लिम बनना होगा।

आखिर ऐसा क्यों होता है! जो सत्ता में होता है उसे ये सब दिखाई नहीं देता। लेकिन जब वही दल विपक्ष में जाता है तो उसे ये सब दिखाई देने लगता है। आज राजस्थान में कांग्रेस की सरकार है, किन्तु जब साल 2003 उस दौरान देश में बी.जे.पी. की सरकार थी, तब विपक्ष में रहते हुए मनमोहन सिंह ने राज्यसभा में तत्कालीन उपप्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवाणी जी के सामने पाकिस्तान और बांग्लादेश हिन्दुओं का मुद्दा उठाया था।

मनमोहन सिंह ने कहा था, 'शरणार्थियों के साथ जिस तरह का व्यवहार किया जा रहा है, उस पर मैं कुछ कहना चाहता हूं। देश के बंटवारे के बाद बांग्लादेश जैसे देशों में अल्पसंख्यकों के साथ अत्याचार हुआ है। ये हमारा दायित्व बनता है कि अगर इन शरणार्थियों के साथ इस प्रकार व्यवहार किया जाता है कि उन्हें देश में शरण लेनी पड़े, तो इन सभी को नागरिकता देते हुए हमें उदार होना चाहिए। मैं उम्मीद करता हूं कि माननीय उपप्रधानमंत्री इस प्रस्ताव पर विचार करेंगे।'

मनमोहन सिंह के इस बयान में अपनी बात जोड़ते हुए तब राज्यसभा डिप्टी चेयरमैन की कुर्सी पर बैठी महिला सांसद ने कहा था, आडवाणी जी, पाकिस्तान में भी भी अल्पसंख्यक प्रताड़ित हो रहे हैं। उनका भी खयाल रखा जाना जरूरी है। मनमोहन सिंह जी के इस बयान पर तत्कालीन उपप्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवाणी ने कहा था, 'मैडम, मैं मनमोहन सिंह की बात से बिल्कुल सहमत हूं। आज मनमोहन सिंह जी के बयान का हवाला हम यहाँ इस कारण दे रहे है क्योंकि मोदी सरकार के द्व ारा जब नागरिकता संशोधन एक्ट को राज्यसभा में पेश किया गया था, तब भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष जेपी नड्डा ने भी मनमोहन सिंह के इसी बयान का हवाला दिया था। जेपी नड्डा

- शेष पृष्ठ 7 पर

पृष्ठ 1 का शेष

केंद्रीय आयोजन समिति की बैठक संपन्न

का सुंदर चित्रण करते हुए महर्षि दयानंद सरस्वती जी की शिक्षाओं को जन-जन तक पहुंचाने का आह्वान किया।

बैठक का संचालन करते हुए श्री विनय आर्य जी ने सभी प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं के अधिकारियों का संक्षिप्त परिचय देते हुए आगामी आयोजनों का एक बड़ा ही सुन्दर प्रस्ताव रखा।

आर्य समाजों की 52 सप्ताहों के कार्यक्रमों की रूपरेखा

भारत सहित संपूर्ण विश्व के आर्य समाज मंदिर हर कार्यक्रम की पृष्ठभूमि के रूप में कार्य करेंगे। महर्षि दयानंद सरस्वती की जीवनी, श्रीमद् दयानंद प्रकाश में 52 अध्याय हैं, प्रत्येक सप्ताह एक अध्याय का पठन-पाठन करें और करावें। आर्य समाज के प्रत्येक अधिकारी, कार्यकर्ता और सदस्य को महर्षि के परोपकारी जीवन से परिचित होना ही चाहिए। इसके साथ ही आर्य समाज के गौरवशाली इतिहास को भी 52 अध्यायों में सभी आर्य समाजों को दिया जाएगा, उसका स्वाध्याय किया जाए। इस प्रस्ताव को सभी अधिकारियों ने सर्वसम्मति से स्वीकार किया।

मेरी पहचान आर्य समाज

आर्य समाजों के लिए अगला प्रस्ताव यह रखा कि मेरी पहचान आर्य समाज के लिए प्रत्येक आर्य परिवार अपने घर में महर्षि दयानंद सरस्वती का चित्र ऐसे स्थान पर सजाकर रखें जहां आने जाने वाले सब लोग देखें। घर की छत पर ओम का झंडा लगाएं। नमस्ते का स्टीकर प्रवेश द्वार पर लगा हो। घर में सत्यार्थ प्रकाश, आर्य दर्पण और महर्षि दयानंद की जीवनी अवश्य होनी चाहिए। जिससे पता लगे कि हम आर्य समाजी हैं। इस प्रस्ताव को सभी ने एकमत से स्वीकार किया।

मेरा परिवार आर्य परिवार

आर्य समाज परिवार की वृद्धि के लिए- आर्य बाल वाटिका, आर्य कुमार सभा, आर्यवीर/वीरांगना दल, आर्य समाज की सदस्यता इन चार तरह की सदस्यताओं का विस्तृत वर्णन करते हुए श्री विनय आर्य जी ने कहा कि जन्म से 6 वर्ष की आयु तक के बच्चों को आर्य बाल वाटिका का सदस्य बनाएं, उनके लिए त्रैमासिक, अर्धवार्षिक, वार्षिक कोई ना कोई प्रेरक एक्टिविटी आर्य समाजों में चलाई जाएगी। 6 वर्ष से 12 वर्ष की आयु के बच्चों को आर्य कुमार सभा का सदस्य बनाएं, उनके लिए भी प्रेरक आयोजन समय-समय पर किए जाएंगे। 12 वर्ष से 18 वर्ष की आयु के बालक, बालिकाओं को आर्य वीरांगना और आर्यवीर दल का सदस्य बनाएं। उन्हें वहां पर चरित्र निर्माण और शारीरिक प्रशिक्षण प्राप्त होगा और वैदिक संस्कार भी प्राप्त होंगे। 18 वर्ष के बाद आर्य समाज की सदस्यता लेकर सभी आर्य परिवारों के बच्चे आर्य समाज के सभी कार्यक्रमों में अग्रणी भूमिका निभाएंगे। इस प्रस्तावित योजना को अपनाने से मेरा परिवार आर्य समाज परिवार बन जाएगा। इस महत्वपूर्ण प्रस्ताव का सभी अधिकारियों ने स्वागत किया।

दो वर्षीय जन संपर्क अभियान, प्रत्येक व्यक्ति 200 लोगों तक पहुंचने का रखेंगे लक्ष्य

भारत और विश्व की सभी आर्य समाजों के अधिकारी, कार्यकर्ता, सदस्य, विशेष रुप से जनसंपर्क

केन्द्रीय आयोजन समिति की बैठक में आगामी कार्यक्रमों को लेकर हाथ उठाकर ओ3म् ध्वनि के साथ प्रस्ताव पारित करते हुए विभिन्न प्रांतीय सभाओं के अधिकारी एवं मंचस्थ महानुभाव

अभियान चलाएंगे। जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को 200 व्यक्तियों तक पहुंचने का लक्ष्य दिया जाएगा। हमारे पास 750 दिन हैं और इन 750 दिनों में हमें 200 व्यक्तियों तक पहुंचना कोई बहुत बड़ी बात नहीं है। जिस भी व्यक्ति तक हम पहुंचे उसे एक पीत वस्त्र, महर्षि की जीवनी, छोटा सा महर्षि दयानंद का चित्र या कोई स्टिकर उन्हें भेंट करेंगे और उनके साथ सुंदर चित्र लेकर उसे सोशल मीडिया पर अपलोड करेंगे।

इस क्रम में क्षेत्रीय सांसद, विधायक, निगम पार्षद, एस.डी.एम., वकील, व्यापारी, धार्मिक संगठनों के अधिकारी और अन्य विभागों के अधिकारी, अन्य अनेक वर्ग के लोग शामिल किए जा सकते हैं। इस प्रस्ताव पर केंद्रीय आयोजन समिति के अध्यक्ष श्री सुरेंद्र कुमार आर्य जी ने कहा कि अगर कोई व्यक्ति 100 व्यक्तियों तक पहुंचता है तो उसे शतकवीर कहा जाएगा और उन्हें केंद्रीय संयोजन समिति की ओर से प्रमाण पत्र भी दिया जाएगा। जो 200 तक पहुंचेगा उसे भी प्रमाण पत्र और सम्मान दिया जाएगा लेकिन जो व्यक्ति 1000 लोगों तक पहुंचता है, उसे सहस्त्रवीर की उपाधि दी जाएगी। सभी ने इस प्रस्ताव को हृदय से स्वीकार किया और अपने अपने प्रांतों में जन-जन तक पहुंचने का संकल्प लिया। केंद्रीय आयोजन समिति की इस विशेष बैठक में 2025 के अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, आगामी 2024 में महर्षि दयानंद सरस्वती के 200वीं जयंती, 149वां आर्य समाज स्थापना दिवस आदि समारोह के आयोजनों पर विचार विमर्श किया गया।

विशेष रूप से प्रत्येक प्रांतीय सभा आगामी ढाई वर्षों में एक वृहद ज्ञान ज्योति पर्व का भव्य आयोजन करेगी। सभी आर्य समाजों में इस पर्व के आयोजन होंगे। अधिकतम संख्या दिवस एक रविवार को पूरे विश्व में एक साथ मनाया जाएगा। आर्य समाज के पूर्व सदस्यों को, उनके परिवारों को फिर से जोड़ने का अभियान चलाया जाएगा। सभी अपने आर्य समाजों के सामने बड़ा होर्डिंग्स लगाएंगे। महर्षि की 200वीं जयंती से लेकर आर्य समाज स्थापना दिवस तक सभी आर्य समाजों को सुंदर लाइटिंग से सजाया जाएगा। इन सभी प्रस्तावों को प्रांतीय सभाओं के सभी अधिकारियों ने सहर्ष स्वीकार किया।

अध्यक्षीय उदबोधन

केंद्रीय आयोजन समिति के अध्यक्ष श्री सुरेंद्र कुमार आर्य जी ने अपने संक्षिप्त उद्बोधन में कहा कि यहां पर भारत वर्ष के सभी प्रांतीय सभाओं के अधिकारी उपस्थित हैं। सभी का आत्मविश्वास देखकर मुझे बहुत ही प्रसन्नता हो रही है। हमारी सारी योजनाएं अच्छी हैं, महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती और आर्य समाज के 150वें स्थापना दिवस के संपूर्ण कार्यक्रम भव्यता के साथ सफलता पूर्वक संपन्न होंगे। ऐसा मुझे पूरा विश्वास है। महर्षि की विरासत को हमें आगे बढ़ाना है। आर्य समाज के ओम ध्वज को पूरे विश्व में हमें फहराना है, अपनी शक्ति को बढ़ाएं, अपने संख्या बल को बढ़ाएं, मैं आप सभी को इस अवसर पर हार्दिक शुभकामनाएं और बधाई देता हूं।

श्री विनय आर्य जी ने केंद्रीय आयोजन समिति के कार्यों का वर्णन करते हुए बताया, वेद परिवार निर्माण का अभियान चलाया जाएगा। महर्षि दयानंद सरस्वती के जीवन पर आधारित कॉमिक्स प्रतियोगिता का आयोजन किया जाएगा। सत्यार्थ प्रकाश स्वाध्याय अभियान चलाया जाएगा। समूह गान प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाएगा। कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक ज्ञान ज्योति यात्रा का आयोजन किया जाएगा। आर्य समाज का इतिहास लिखा जाएगा। आर्य समाज के 350 महापुरुषों के प्रेरणा कार्यों को सूचीबद्ध किया जाएगा। इस अवसर पर सभी प्रांतीय सभाओं द्वारा एक विशेष कार्यक्रम आयोजित करने की घोषणाएं की गईं। अधिकांश प्रांतीय सभाओं द्वारा अपने राज्य में भव्य आयोजन की निश्चित ही बताई गई।

महर्षि दयानंद सरस्वती की दो 200वीं जयंती पर अवकाश घोषित कराएं।

महर्षि की तपस्थली प्रेरणा स्थली के रूप में प्रसिद्ध करें।

राज्य सरकारों के सभी अधिकारियों को अपने कार्यक्रमों में आमंत्रित करें।

महर्षि दयानंद सरस्वती की जयंती पर अपने राज्य सरकारों द्वारा अखबारों में विज्ञापन प्रकाशित कराएं

ज्ञान ज्योति यात्रा आपके राज्य में कहां से और कहां कहां तक कैसे-कैसे जाए, मार्गों का निर्धारण करें

हर स्थान पर अधिक से अधिक संख्या में यात्रा का स्वागत करें, कार, मोटरसाइकिलों के काफिले साथ में चलें

सा. सभा के प्रधान जी का उदबोधन

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेश चंद्र आर्य जी ने सभी अधिकारियों को निर्देश दिया कि अपने क्षेत्रीय आर्य समाजों में, प्रांतीय सभाओं में आर्यवीर दल, आर्य वीरांगना दल की स्थापना करें। अपने लेटरहेड पर और सभी दस्तावेजों पर महर्षि दयानंद की 200वीं जयंती का लोगो प्रकाशित करें।

धर्मपाल आर्य जी का उदबोधन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने उपस्थित सभी अधिकारी, कार्यकर्ताओं और सदस्यों को संबोधित करते हुए कहा की आर्य समाज द्वारा मानव सेवा के अनेक प्रकल्प यज्ञ के रूप में चल रहे हैं। इन सेवा यज्ञों की अग्नि को उद्बुद्ध कीजिए। यज्ञ में आहुति दीजिए, सेवा के यज्ञ निरंतर आगे बढ़ते रहेंगे, यह हमें संकल्प लेना है, सेवा यज्ञों की अग्नि को और प्रचंड करना है, जिससे संपूर्ण विश्व में महर्षि दयानंद सरस्वती और आर्य समाज की विचारधारा का प्रचार-प्रसार हो और 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का उदघोष साकार हो।

धन्यवाद एवं समापन

केन्द्रीय आयोजन समिति की इस बैठक के दो सत्र लगातार चले। जिसमें सभी अधिकारियों ने गहन विचार विमर्श करके उचित निर्णय लिए और अंत में श्री सुरेश चन्द्र जी ने सबका धन्यवाद किया और बैठक समाप्त हुई।

गु. प्रां. आ. प्र. सभा के तत्वावधान में सौराष्ट्र आर्य प्रादेशिक सभा द्वारा आर्य वीरांगना प्रशिक्षण शिविर संपन्न

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेश चंद्र आर्य की अध्यक्षता में सफलता पूर्वक संपन्न

इस समारोह में अतिथि विशेष के तौर पे ध्रांगध्रा हवद विधानसभा विस्तार के धारासभ्य श्री प्रकाशभाई वरमोरा, गुजरात प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री और श्री बृहद सौराष्ट्र आर्य प्रादेशिक सभा के प्रधान श्री दीपकभाई ठक्कर, गुजरात प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण गुजरात जोन के उपप्रधान श्री रोहितभाई शर्मा, गुजरात प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा और श्री बृहद सौराष्ट्र आर्य प्रादेशिक सभा के कोषाध्यक्ष श्री विजयभाई बोरीचा, श्री बृहद सौराष्ट्र आर्य प्रादेशिक सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री कांतिभाई किकाणी, जवालाधाम- राजस्थान के श्री स्वामी सच्चीदानंद महाराज, विश्व हिन्दू परिषद प्रांतीय के उपप्रधान श्री कृष्ण मुरारीजी अग्रवाल, श्री बृहद सौराष्ट्र आर्य प्रादेशिक सभा के मान मंत्री श्री नरेन्द्रभाई महेता, आर्यसमाज राजकोट के प्रधान श्री रणजीत सिंहजी परमार, आर्यसमाज नडियाद के मेनेजिंग ट्रस्टी श्री दिनेश चंद्रजी आर्य उपस्थित रहे।

सभा के अध्यक्ष और सभी अतिथि विशेषश्रीयों का आर्यसमाज धांगध्रा के ट्रस्टीगण, पदाधिकारीयों, सभासदो द्वारा उपवस्त्र और पुस्तकों से स्वागत किया गया। शाब्दिक स्वागत आर्यसमाज ध्रांगध्रा के उपप्रधान श्री लालजी भाई परमार ने किया। प्रसंगोचित उद्बोधन ध्रांगध्रा हवद विधानसभा विस्तार के धारासभ्यश्री प्रकाश भाई वरमोरा, गुजरात प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री और श्री बृहद सौराष्ट्र आर्य प्रादेशिक सभा के प्रधान श्री दीपकभाई ठक्कर और जवालाधाम- राजस्थान के श्री स्वामी सच्चीदानंद महाराज ने किया।

प्रशिक्षण शिविर की विजेता आर्य वीरांगना को पुरुष्कार देते हुए श्री सुरेश चन्द्र जी एवं अन्य महानुभाव

समारोह के अध्यक्ष और मंचस्थ महानुभावो द्वारा आर्य वीरांगनाओं को परेड की सलामी दी गई और आर्य वीरांगनाओ द्वारा शारीरिक शिक्षण और तलवार बाजी का निर्देशन किया गया। आर्यसमाज ध्रांगध्रा में आर्य वीरांगनाओं को निरंतर प्रशिक्षण देने के लिए संचालक श्री जीवणभाई धांघर को विशेष सन्मानित किया गया और दिल्ली से पधारी हुई प्रशिक्षण बहनों को सन्मानित किया गया।

बौद्धिक, मार्च पास्ट (परेड), शारीरिक शिक्षा में प्रथम, द्रितीय, तृतीय क्रमांक प्राप्त आर्य वीरांगना बहनों को चंद्रक, शिल्ड और प्रोत्साहक पुरस्कार (सर्टिफिकेट फाइल) सभी अतिथि विशेष और आर्यसमाज ध्रांगध्रा ट्रस्टीगण, पदाधिकारीओं और सभासदों के करकमलो द्वारा दिया गया। प्रत्येक आर्य वीरांगनाओं को प्रमाणपत्र दिया गया। तद्उपरांत प्रत्येक आर्य वीरांगना को आर्यसमाज जामनगर की और से तीन पुस्तकों का सेट, आर्यसमाज पोरबंदर से एक पुस्तक और प्रथम, द्रितिय, तृतिय को आर्यसमाज टंकारा की ओर से पुस्तकें और आर्यसमाज वढवाण के श्री प्रविणभाई आर्य की ओर से स्कूलबैग दिया गया। विश्व हिन्दू परिषद के प्रांतीय उपप्रधान श्री कृष्णमुरारीजी अग्रवाल की ओर से प्रत्येक आर्य वीरांगना बहनों को एक बेडशीट पुरस्कार के रुप में भेट की गई। इस समारोह के अध्यक्ष सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा और गुजरात प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेशचंद्रजी आर्य ने इस शिविर की महत्व को समझाते हुऐ महर्षि दयानंद सरस्वती प्रतिपादित वैदिक धर्म का अनुकरण करते हुए शारीरिक, आत्मिक, मानसिक, उन्नति करते हुए एक स्वस्थ समाज का निर्माण करने का आह्वान किया।

आभार व्यक्त आर्यसमाज ध्रांगध्रा के प्रधान श्री भरत भाई सोनगरा द्वारा किया गया, जिसमें उन्होने गुजरात प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा और श्री बृहद सौराष्ट्र आर्य प्रादेशिक सभा के पदाधिकारीयों, अतिथि विशेषश्रीयों, आर्यसमाज ध्रांगध्रा के ट्रस्टीगण, पदाधिकारीओं, सभासदों का आभार व्यकत किया और विशेष रुप से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा और गुजरात प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेशचंद्रजी आर्य, गुजरात प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री और श्री बृहद सौराष्ट्र आर्य प्रादेशिक सभा के प्रधान श्री दीपक भाई ठक्कर का आभार व्यकत किया। समापन समारोह का संचालन श्रीमद् दयानंद कन्या विद्यालय जामनगर के आचार्या श्री प्रफुल्लाबेन रुपडिया ने किया।

वैदिक रेफरेंस लाइब्रेरी – एक वृहद योजना

दिल्ली सभा के इस सृजनात्मक अभियान में प्रत्येक आर्य व्यक्ति, परिवार, संस्था और समाज वैदिक साहित्य को एकत्रित करने में पूरी शक्ति से करें सहयोग प्रदान

किसी भी संस्था या संगठन के विचार, मान्यताएं और परंपराओं के प्राण उसके साहित्य-पुस्तकों में समाए होते हैं। वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों के उत्थान में आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती जी से लेकर पंडित लेखराम, स्वामी श्रद्धानंद, लाला लाजपतराय, महात्मा हंसराज, पंडित गुरूदत्त विद्यार्थी, स्वामी दर्शनानंद, स्वामी स्वतंत्रानंद, महात्मा नारायण स्वामी, पंडित तुलसीराम, ब्रह्मदत्त जिज्ञासु, गंगाप्रसाद उपाध्याय, आर्यमुनि इत्यादि हमारे महापुरुषों ने वेदज्ञान की अविरल धारा को जन-जन तक पहुंचाने के लिए कठिन परिश्रम किया और अत्यधिक मात्रा में साहित्य सृजन कर पुस्तकों के रूप में उसे वितरित भी किया। इसी ज्ञान संपदा की बदौलत आज हम देश के कोने-कोने में और विश्व के 32 देशों तक विस्तार कर पाए हैं। इस क्रम को लगातार आगे बढ़ाने की प्रेरणा देते हुए पंडित लेखराम ने कहा था कि विचारशीलता और लेखन का कार्य आर्यसमाज की ओर से निरंतर चलते रहना चाहिए। जिसके परिणामस्वरूप आर्य समाज के सैकड़ों सुप्रसिद्ध संन्यासियों और विद्वानों ने वैदिक साहित्य कोष की निरंतर अभिवृद्धि की। किंतु आज हामरे महापुरुषों के द्वारा निर्मित कई पुस्तकें ऐसी हैं जो

बहते समय के प्रवाह के साथ-साथ धीरे-धीरे समाप्त होती जा रही हैं। बहुत सी पुस्तकों को किन्हीं कारणों से प्रकाशित नहीं किया जा रहा है और इस तरह बहुत-सी पुस्तकें जो अत्यंत उपयोगी थीं, उनका मिलना लगातार बहुत कठिन होता जा रहा है।

इन समस्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने कई वर्षों पूर्व ''वैदिक रेफरेंस लाइब्रेरी'' की योजना का शुभारंभ किया था और सभी आर्य समाजों एवं आर्य जनों से अनुरोध किया था कि आपके घर की अथवा आर्यसमाजों एवं आर्य शिक्षण संस्थाओं की लाइब्रेरी में कहीं पर भी दुर्लभ वैदिक साहित्य उपलब्ध हो तो कृपया उसे दिल्ली सभा द्वारा संचालित वैदिक रेफरेंस लाइब्रेरी में पहुंचाने की कृपा करें। बहुत से आर्यजनों ने बहुत-सी उपयोगी पुस्तकें पहुंचाई भी हैं, उन सभी महानुभावों का धन्यवाद। लेकिन सभा का यह कार्य अभी अधूरा है, सभा की यह वैदिक रेफरेंस लाइब्रेरी की योजना बड़ी व्यापक है, इसके पीछे भावना यही है कि-

1- आर्य समाज का संपूर्ण वैदिक साहित्य एक स्थान पर पुस्तकों के रूप में हार्ड कापी और साफ्ट कापी दोनों फार्मेट में उपलब्ध हो और यह सारी वैदिक ज्ञान संपदा आर्य समाज की वैबसाइट पर भी उपलब्ध हो।
2- जिसके परिणाम स्वरूप संपूर्ण विश्व में कहीं भी, कभी भी और कोई भी आर्य सज्जन जिस किसी भी पुस्तक का स्वाध्याय करना चाहे अथवा किसी पुस्तक के रेफरेंस से कोई बात प्रमाणित करना चाहे तो वह तुरंत आर्य समाज की वेबसाइट पर जाकर ई. संस्करण द्वारा कर सके।
3- इस तरह आर्य समाज का प्रचार प्रसार भी तीव्रगति से संभव होगा, हमारे पूर्वजों ने जिस लोकोपकारी भावना से कठिन तप करके पुस्तकों की रचना की थी उसकी रक्षा होगी और हमारी अमूल्य निधि वैदिक ज्ञानधारा भी सुरक्षित होगी।
4- इसके साथ साथ आधुनिक तकनीक का उपयोग करके हम देश की युवा पीढ़ि को आर्य विचारधारा और वैदिक ज्ञानधारा से सरलता से जोड़ने मे सफल होंगे।
5- बंधुओ, आज समाज तीव्र गति से बदलाव की ओर बढ़ रहा है, इस परिवर्तन की धारा में हमें अपने वैदिक विचार-मान्यताएं और परंपराओं को सहेजना भी है और उन्हें प्रसारित भी करना है। इसी भावना और कामना को साकार करने में वैदिक रेफरेंस लाइब्रेरी बहुत बड़ी भूमिका निभाएगी।

अत: इस विशेष अनुरोध पर गहराई से चिंतन करें, इसके महत्व को समझें और वैदिक साहित्य को वैदिक रेफरेंस लाइब्रेरी में अपना नाम, पता एवं सम्पर्क सूत्र लिखकर रजिस्टर्ड डाक/कोरियर द्वारा ''प्रबन्धक, वैदिक रेफरेंस लाईब्रेरी'' के नाम- दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 के पते पर भेजें।

- विनय आर्य, महामंत्री

द. सेवाश्रम संघ के तत्वावधान में 40वें वैचारिक क्रांति शिविर का उदघाटन

27 मई को सायं 4 से 7, केदारनाथ साहनी आडिटोरियम, सिविक सेन्टर में होगा समापन समारोह

जन जागरण एवं मानव सेवा को समर्पित आर्य समाज भारतीय संस्कृति, संस्कृत और संस्कारों के संरक्षण तथा संवर्धन के लिए सदैव कृत सकंल्प है। गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ द्वारा 40वें वैचारिक क्रांति शिविर 19 से 27 मई 2023 तक दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के सहयोग से आर्य समाज मंदिर रानी बाग में आयोजित किया गया है। जिसमें भारत के 13 वनवासी राज्यों से लगभग 500 युवक, युवतियां शिविरार्थी के रूप में भाग ले रहे हैं, 19 मई को शिविर का विधिवत उद्घाटन हुआ, जिसमें आर्य समाज के शीर्ष नेतृत्व सहित आर्य केंद्रीय सभा के अधिकारियों ने शिविरार्थियों को आशीर्वाद दिया। 21 मई को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेश चंद्र आर्य जी सहित विभिन्न प्रांतीय सभाओं के अधिकारियों ने भी वनवासी क्षेत्रों से आए बच्चों को आशीर्वाद दिया। शिविर का समापन 27 मई 2023 को सायं 4 बजे से 7 बजे तक केदारनाथ साहनी आडिटोरियम, सिविक सेंटर, अपोजिट रामलीला मैदान में भव्य रूप से किया जाएगा। इस अवसर पर अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, वनवासी आर्य कार्यकर्ता संगम में आप सभी सादर आमंत्रित हैं

19 मई को आर्य समाज रानीबाग में 40वें वैचारिक क्रान्ति शिविर का दीप प्रज्वलित कर उदघाटन करते हुए सर्वश्री सत्यानंद आर्य जी, ठाकुर विक्रम सिंह जी, राजकुमार जी, श्रीमती सुषमा शर्मा जी, सुषमा जी को चित्र भेंट करते हुए विनय आर्य जी, आदेश गुप्ता जी, उषा किरण कथूरिया जी विभिन्न सांस्कृतिक परंपराओं से आए हुए वनवासी शिविरार्थियों को आशीर्वाद देते हुए सार्वदेशिक सभा के प्रधान जी सहित विभिन्न प्रांतीय सभाओं के अधिकारीगण एवं आचार्य वागीश जी को ओ३म् का स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए जोगेन्द्र खट्टर जी

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती के आयोजनों की श्रृंखला में दिल्ली में सार्वजनिक स्थानों एवं अनेक बस्तियों में लगातार हो रहा वेद प्रचार

वेद प्रचार रथ के माध्यम से यज्ञ और प्रवचनों में हर आयुवर्ग के लोग बढ़ चढ़कर ले रहे हिस्सा

- नशा न करने का संकल्प ले रहा युवा वर्ग
- घर-घर यज्ञ करने का संकल्प ले रहे महानुभाव
- वैदिक धर्म, संस्कृति, संस्कारों से पोषित हो रहा मासूम बचपन
- आर्य समाज से जुड़ रहे हैं प्रतिदिन सैकड़ो लोग

युवा पीढ़ी को नशामुक्त बनाओ, यौवन बचाओ, रिश्ते बचाओ, गले लगाओ, मोटा अन्न प्रयोग में लाओ, पर्यावरण को शुद्ध बनाओ, महिला सशक्तिकरण और आर्य समाज के सेवा कार्यों को आगे बढ़ाने एवं महर्षि की शिक्षाओं को जन-जन तक पहुंचाने का अभियान सफलता पूर्वक बढ़ रहा है आगे

Vegetation, Creatures and Man on Earth

As shown already, the earth is one of the planets of our solar system, having shot out from the sun at a very early stage of the creation, whose age, though, said to be 1,972,490,084 years (1980 A.C. or 2037 Vikram) according to the Indian astronomers, is anybody's guess. Even some of the western cosmologists and paleontologists today count the age of the earth as something like 2 billion years.

Originally, the earth was an intensely hot mass (the sun and the earth being of the same composition—vide Yajurved, 26.1, which states : "Agnishhcha prithhivee cha sannathe", i.e. ,'The sun and the earth are of the same make up'), having come out of the sun in keeping with the Divine plan of creation. Still, as we all actually know today, the earth has enough to intense heat according to the depth reached. Even the Vedas state almost the same at various places, the most relevant of which may be noted hereunder :-

'Like mother,to a child, the earth, round like an earthen pot, bears in her inside (womb) the sustaining heat'—Yajurved, 12.61 ("Maatheva puthram prithhivee pureeshyamagnigwam swe yonau-abhaarukhaa")

Gradually, after its separation from the sun, the earth's outer surface cooled down to a certain depth, faciliating the growth of grass, herbs, shrubs, thickets, creepers, trees, etc. And when it cooled down further and became a fit abode for the animal life, then, insects, annelida, amphibians, reptiles, avcs and mammals were created one after another; amongst the mammals, sheep, according to the Yajurved, being the earliest. The Yajurved, 13.50, makes the interesting statement : '0 the leader (king), engaged in the supreme duty, don't offer violence to this wool-bearing sheep, prime sustainer, cover provider to the two-footed (humans) and the four-footed animals and the first created of the Creator's cattle' ("Imamoornhaayum varunhasya. naabhim thvacham pashhoonaam dhvipadhaam chatushpadhaam; Thvashtuh Prajaanaam prathhamam janithramagne maa higwamseeh parame vyoman").

It's noteworthy that the Veda makes the categorical statement : 'The Lord of beings, through the seven sustaining powers (liver, spleen, navel, heart, generative region gland, bladder and kidneys), brings forth (procreates) the seven domisticable (useful) animals (cow, bull and bullock, buffalo, buffalo-cow, goat, sheep and horse)'—Yajurved, 9.32 ("Maruthah sapthaaksharenha saptha graamyaan -pashoon-udhaja. yan"). According to the Vedas, it appears that all these seven useful cattle were created not much too long before the advent of mankind, the users and minders of the same.

When, thus, everything was well set on the earth, mankind was created last as the highest product of nature or the highest creature in the Divine set up of things. The Vedas -support this proposition.

To be continued in next issue

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
के अन्तर्गत
वैदिक प्रकाशन द्वारा प्रकाशित
वैदिक साहित्य
अब
amazon
पर भी उपलब्ध
अपनी पसंदीदा वैदिक पुस्तकें घर बैठे प्राप्त करने के लिए आज ही लॉगइन करें
bit.ly/VedicPrakashan
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
मो. 09540040339, 011-23360150

आर्योद्देश्यरत्नमाला पद्यानुवाद

प्रार्थना-प्रार्थना का फल-उपासना

24-प्रार्थना

श्रेष्ठ कर्म की सिद्धि
को करे पूर्ण उद्योग ।
यही 'प्रार्थना' ईश का ले
जन का सहयोग ।।31।।

25-प्रार्थना का फल

आत्मा में हो आर्द्रता,
गुण-ग्रहण में यत्न ।
अहं नष्ट हो 'प्रार्थना' का
पावे फल रत्न ।।32।।

26-उपासना

ईश्वर के आनन्द में
आत्मा करे निवास ।
जिससे, वही 'उपासना'
ऋषियों का विश्वास ।।33।।

साभार :
सुकवि पण्डित ओंकार मिश्र जी द्वारा पद्यानुवादित पुस्तक से

प्रेरक प्रसंग

चमत्कारी मियाँजी की पोल खुल गई

आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध नेता और अनाथों के रक्षक व सेवक पण्डित श्री गंगारामजी मुजफ्फरगढ़ (पश्चिमी पंजाब) में अपने कार्यालय में बैठे हुए थे। उन्हीं के साथ बैठने वाले उसी कार्यालय के ड्राफ्टमैन लाला लद्धारामजी रैलन ने उनसे कहा, ''देखो! पण्डितजी एक व्यक्ति कैसा साहिबे कमाल है कि जो वस्तु जिस किसी के पास हो, ठीक-ठीक बता देता है।''

पं. गंगारामजी समझते थे कि ऐसे साहिबे कमाल (चमत्कारी) पुरुष हों तो शासन को पुलिस व गुप्तचर-विभाग की तनिक भी आवश्यकता न रहे। आपने उससे कहा कि यदि वह ठीक-ठीक बता दे तो मैं उसे अपने पास से एक रुपया दूँगा। लाला लद्धरामजी ने कहा, 'पण्डित जी! वह ठीक-ठीक बता देता है, आप इस प्रकार से अपने रुपये को न गँवाएं।'

पण्डितजी ने कहा, 'इस प्रकार से कुछ हानि नहीं होती।' उसने वैन मिलडर साहिब हैडक्लर्क (कोई अंग्रेज होगा), जिसके पास यह खेल हो रहा था, के पास जाकर पण्डितजी की बात कह दी। उन्होंने पण्डितजी को बुलाकर पूछा कि आपका क्या कहना है? उन्होंने कहा यदि यह छपाई हुई वस्तु बता दे कि किसके पास है तो मैं उसको एक रुपया दूँगा।

इसपर अंग्रेज ने उस साहिबे कमाल मुसलमान चपरासी खैर मुहम्मद से कहा कि तुम बाहर चले जाओ। पण्डितजी ने कहा, ''यह मुझे स्वीकार नहीं। जिन लोगों ने वस्तु छुपानी है, वे बाहर चले जावें और यह चमत्कारी मियाँ आपके पास ही बैठा रहे।'' उन्होंने कहा, ठीक है, ऐसा ही करते हैं। पण्डितजी ने वहाँ उपस्थित लाला लद्धारामजी, लाला गोद्धारामजी तथा लाला गुरदित्तारामजी को अपने साथ लिया और कमरे के बाहर एक बरामदे में चले गये। पण्डितजी ने उनमें से एक के हाथ में एक वस्तु दे दी और सब कमरे में आ गये।

अब उस अंग्रेज से कहा गया कि इसे पूछो कि वह वस्तु किसके पास है। एक तख्ती पर कुछ रेखाएं खिंची हुई थीं। मियाँजी ने बाहर से अन्दर आये हुए चारों सज्जनों से कहा कि बारी-बारी इस पर अंगुलियां रखें। कुछ समय के पश्चात् उसने कहा कि वह वस्तु श्री गंगारामजी के पास है। पण्डितजी के साथियों ने कहा 'नहीं।'

उस अंग्रेज ने कहा, सम्भव है कि इसके गणित में भूल हो गई हो। एक बार और देख लें। इस पर पण्डितजी ने कहा कि इस बार यह ठीक बता दे तो मैं केवल आठ आने (आजकल के पचास पैसे) ही दूँगा। उन्होंने स्वीकार कर लिया। इस बार भी वह ठीक न बता सका।

फिर कहा गया कि चलो एक बार और परीक्षा कर लेते हैं। पण्डितजी ने कहा, ''इस बार यह न बता सका तो मैं एक रुपया इससे लूँगा।'' इस पर उन्होंने कहा, ''अब लेना-देना कुछ नहीं। पण्डितजी ने यह भी स्वीकार कर लिया। इस बार वहाँ एक सिख भाई कोटसिंह लाला लद्धाराम को एकान्त में ले गया और कहा कि करबद्ध प्रार्थना है कि आप हमारी प्रतिष्ठा बचावें। जैसे मैं कहूँ वैसे कीजिए। लाला लद्धाराम ने कहा, 'कैसे करें?' उसने कहा जिसके पास वस्तु हो, आप उसके पश्चात् रेखा पर हाथ रखिए। इससे पता चल जाएगा कि वस्तु किसके पास है। चमत्कारी मियाँ झट बता देंगे कि उसी के पास है जिसके पश्चात् आपने अंगुली रखी है।

लाला लद्धाराम ने यह बात पण्डितजी को बता दी। श्री पण्डितजी ने कहा, अब तो बात स्पष्ट हो गई। पहले पण्डितजी को भय था कि सम्भवत: वह साहिबे कमाल मियाँ अटकल से ही उस व्यक्ति का नाम बता दे जिसके पास वस्तु है। अब आपको चाहिए कि अँगुली उसके पश्चात् रखें जिसके पास वस्तु नहीं है। ऐसा ही किया गया परिणाम यह निकला कि वह मियाँ इस बार भी विफल हुआ।

कार्यालय के सब अधिकारी, कर्मचारी पहले तो खैर मुहम्मद को चमत्कारी मानते थे। अब पण्डित गंगारामजी ने पोल खोल दी तो सब उसे कपटी, झूठा व छलिया मानने लगे। यदि पण्डित गंगारामजी उसकी पोल न खोलते तो सम्भव है वह लूटने के नये-नये और भी कई ढंग निकालता। अंग्रेजी में एक लोकोक्ति है जिसका भाव यह है- जैसे सफलता के पीछे सफलता आती है, इसका दूसरा कोई उदाहरण नहीं मिलता। यह उक्ति भले कार्यों पर ही चरितार्थ नहीं होती प्रत्युत कुकर्मों के लिए भी यह सर्वथा ठीक है। एक-दो-चार खोटे कर्म कीजिए फिर कुकर्मों में अपने आप मन लगेगा।

-प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :
तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

पृष्ठ 2 का शेष

मजारों के लिए जगह है हिन्दुओं के घरों के लिए नहीं?

ने तब कहा था कि हमारी सरकार मनमोहन सिंह की बात को ही आगे बढ़ा रही है। अब मनमोहन सिंह की बात कितना आगे बढ़ी आंकड़े और खबर इसकी गवाही दे रहे हैं। साल 2018 में गृह मंत्रलय ने नागरिकता आवेदन की ऑनलाइन प्रक्रिया शुरू की थी। मंत्रालय ने सात राज्यों में 16 कलेक्टरों को भी ये ज़िम्मेदारी दी थी कि वे पाकिस्तान, अफ़गानिस्तान और बांग्लादेश से आए हिंदू, ईसाई, सिख, पारसी, जैन और बौद्धों को नागरिकता देने के लिए ऑनलाइन आवेदन स्वीकार करे। इसके बाद गृह मंत्रालय ने 22 दिसंबर, 2021 को राज्यसभा में बताया था कि ऑनलाइन मॉडयूल के अनुसार, मंत्रालय के पास 10,365 आवेदन लंबित पड़े थे। ये आंकड़े 14 दिसंबर, 2021 तक के थे। इनमें से 7,306 आवेदक पाकिस्तान के थे।

गृह मंत्रालय के डेटा के अनुसार, साल 2011 से 2014 के बीच 14,726 पाकिस्तानी हिंदुओं को एल.टी.वी. यानि लम्बी अवधि वीजा दिया गया था। इसके बाद देश में नई सरकार आई और गृह मंत्रालय के अनुसार ही नवंबर 2021 से लेकर इस साल फ़रवरी तक पाकिस्तानी हिंदुओं को 600 एल.टी.वी. दिए हैं। रिपोर्ट बताती है कि आज अकेले राजस्थान में ही 25 हज़ार पाकिस्तानी हिंदू हैं जो नागरिकता मिलने का इंतज़ार कर रहे हैं। इनमें से कुछ तो बीते 20 सालों से इंतज़ार में हैं। लोगों ने ऑनलाइन भी आवेदन किया है। इसके अलावा भी देखें तो सरकार को साल 2018, 2019, 2020 और 2021 में पड़ोसी देशों के 6 समुदायों से नागरिकता के लिए 8,244 आवेदन मिले।

हालांकि, पूरी प्रक्रिया ऑनलाइन कर दी गई है, लेकिन पोर्टल उन पाकिस्तानी पासपोर्टों को स्वीकार नहीं करता है, जिनकी समय सीमा समाप्त हो चुकी है। इसकी वजह से शरणार्थियों को पासपोर्ट रिन्यू कराने के लिए दिल्ली में पाकिस्तान के उच्चायोग जाने और वहाँ भारी भरकम रक़म देने को मजबूर होना पड़ता है। ऐसे में पासपोर्ट रिन्यू कराने के लिए एक लाख रुपये खर्च करने पड़ते हैं। ये लोग आर्थिक संकट से जूझकर ही भारत आते हैं और ऐसे में उनके लिए इतनी मोटी रक़म जुटाना मुमकिन नहीं है। आवेदन के बावजूद आवेदकों को कलेक्टर के पास जाकर भी चक्कर काटने पड़ते हैं जो कि एक अतिरिक्त बोझ है।

ये भारत का हाल है अगर इसमें पाकिस्तान को देखें तो पाकिस्तान बनने के बाद जब पहली बार जनगणना की गई थी तो उस समय पाकिस्तान की तीन करोड़ चालीस लाख आबादी में से करीब 20 प्रतिशत गैर-मुसलमान थे। मगर आज पाकिस्तान के करीब 20 करोड़ नागरिकों में गैर-मुसलमानों की सूची में अहमदी समुदाय को शामिल कर लिए जाने के बावजूद वहां गैर-मुसलमानों की आबादी 2 से 3 फीसदी में बची है। यानि पाकिस्तान का हिंदू न घर का है न घाट का। वहां धर्म बदलने की मजबूरी, यहां रोजी-रोटी और न जाने कब खदेड़ दिए जाने का खतरा हर समय मंडराता है। और सवाल बन जाता है कि इस देश में हिन्दुओं के लिए एक छोटे से झोपड़े के लिए जगह नहीं है बाकि सड़क के ऊपर-नीचे बीच में चौराहों पर मजार बन सकती है लेकिन किसी हिन्दू के लिए घर नहीं क्योंकि यहाँ तो चिलचिलाती धूप में उनके सिर से छत छीन लेते हैं। **-संपादक**

बच्चों को दें ज्ञानवर्धक एवं मनोरंजन से भरपूर शहीदों की अमरकथाओं पर आधारित कॉमिक्स

प्राप्ति स्थान
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
मो. 9540040339

पर्यावरण शुद्धि यज्ञ हेतु निःशुल्क घी व हवन सामग्री

गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून को यज्ञ करने हेतु श्री वेद प्रकाश वानप्रस्थी (आर्य समाज शकर पुर, दिल्ली-92) की ओर से दो किलो सामग्री और एक किलो घी नि:शुल्क प्रदान किया जा रहा है। जो आर्य समाजें घी और सामग्री प्राप्त करना चहें वे सायं 3 से 6 बजे तक आर्य समाज मन्दिर डी-110 शकर पुर, दिल्ली-92 पहुंचकर प्राप्त कर सकते हैं। अधिक जानकारी के लिए **मोबाईल न. 9540942767 पर संपर्क करें।**

महर्षि दयानन्द की प्रेरक शिक्षाएं

कर व्यवस्था के दोष- सरकार कागद (स्टाम्प) बेचती है। और बहुत सा कागजों पर धन बढ़ा दिया है इससे गरीब लोगों को बहुत क्लेश पहुंचता है। सो यह बात राजा को करनी उचित नहीं क्योंकि इसके होने से बहुत गरीब लोग दु:ख पाकर बैठे रहते हैं। कचहरी में बिना धन के कोई बात होती नहीं। इससे कागजों के ऊपर जो बहुत धन लगाना है सो मुझको अच्छा मालूम नहीं देता। इसको छोड़ने से ही प्रजा में आनन्द होता है।

-सत्यार्थप्रकाश (प्रथम संस्करण- पृष्ठ- 348)

श्रीकृष्ण के प्रति महर्षि के विचार- देखो! श्रीकृष्ण का इतिहास महाभारत में अत्युत्तम है। उनका गुण, कर्म, स्वभाव, चरित्र आप्त पुरुषों के सदृश है। जिसमें कोई अधर्म का आचरण श्रीकृष्ण ने जन्म से मरणपर्यन्त बुरा काम किया हो, ऐसा नहीं लिखा। और भागवत में दूध, दही, मक्खन की चोरी, कुब्जादासी से समागम, परस्त्रियों से रासमण्डल, क्रीडा आदि मिथ्या दोष श्रीकृष्ण में लगाये हैं। इसको पढ़-पढ़ा-सुन-सुनाके अन्य मतवाले श्रीकृष्ण की बहुतसी निन्दा करते हैं। जो यह भागवत न होता तो श्रीकृष्णजी के सदृश महात्माओं की झूठी निन्दा क्यों होती?

-सत्यार्थ प्रकाश 11वाँ समुल्लास

अधिकांश रूप से यह अनुभव किया जाता है कि स्थान विशेष पर या समय विशेष पर वैदिक सूक्तियों और प्रेरक सुभाषितों की आवश्यकता होती है। जैसे स्कूल में, गौशाला में, आश्रमों में, खेल के स्थानों पर, पर्व, उत्सव, सम्मेलन, महासम्मेलन, प्रभात फेरी, शोभायात्रा आदि में प्रेरणाप्रद प्रमाणिक वाक्य लिखने के लिए हम समय-समय पर विचार करते हैं। किन्तु उस समय पर हमें वह उपयोगी मैटर मिल नहीं पाता। अत: आर्य संदेश के सुधी पाठकों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए शास्त्रोक्त वचनों के प्रचार-प्रसार हेतु हमने एक नियमित कालम प्रारम्भ किया है। जिसमें हर बार कुछ सूक्तियां निरंतर प्रकाशित करने का प्रयास किया जाएगा।

-संपादक

वैदिक सूक्तियां

34- अहिंसा

माहिꣳसीस्तन्वा प्रजाः

-यजु -12-33

(प्रजा एवं पशु की शारीरिक हिंसा मत करो।)

35- ध्यान-योग

अग्निमिन्धानो मनसा धियं सचेत मर्त्यः -ऋ -08-102-22

(ज्योति स्वरूप परमेश्वर को ही अपने अन्त:करण में ध्यान करो।)

36- मनुष्य

मत्वा कर्माणि सीव्यन्ति इति मनुष्यः

-निरुक्त -03-189

(वैदिक आदेश को मानने वाला मनुष्य है।)

37- धैर्य

धैर्य धनः ही साधवः

-नीति वचन

(धर्य को धारण करने वाले मनुष्य धर्मात्मा है।)

वैदिक शगुन लिफाफे

महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित सुन्दर डिजाइनों में

मात्र 300/-रु. सैंकड़ा

प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें

वैदिक प्रकाशन, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1, मो. 9540040339

सोमवार 22 मई, 2023 से रविवार 28 मई, 2023
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि. नं0 डी. एल. (एन. डी.)- 11/6071/2021-22-2023
LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 24-25-26 मई, 2023 (बुध-वीर-शुक्रवार)
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2021-2023
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथिः बुधवार 24 मई, 2023

आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश द्वारा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एव आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में

1000 आर्य वीरों का 10 दिवसीय आवासीय चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर

दिनांक 26 मई से 4 जून 2023

स्थानः- डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल राजेन्द्र नगर, साहिबाबाद, गाजियाबाद

उदघाटन :- 28 मई 2023 सायं 5 बजे

समापन समारोहः- 4 जून 2023 सायं 4 बजे

शिविरार्थियों हेतु निर्देशः ❖ शिविरार्थियों की आयु 12 वर्ष से अधिक हो। ❖ शिविर शुल्क 300/- रुपये प्रति शिविरार्थी होगा। ❖ शिविरार्थी फार्म 20 मई तक शिविर शुल्क के साथ कार्यालय में जमा करवाएं ❖ शिविरार्थी अपने साथ कोई कीमती सामान न लाएं। ❖ शिविरार्थी भोजन के लिए थाली, गिलास, चम्मच, कटोरी, ऋतु अनुकूल बिस्तर साथ लाएं। ❖ खाकी हाफ पैण्ट, सफेद सैण्डो बनियान, सफेद मोजे व जूते, दल की टोपी, लंगोट, लाठी, टार्च साथ लाएं। गणवेश की उपलब्धता शिविर स्थल पर भी रहेगी।

निवेदक

जगवीर आर्य	बृहस्पति आर्य	सुन्दर आर्य	बृजेश आर्य
संचालक	महामंत्री	कोषाध्यक्ष	अधिष्ठाता
	9990232164	9899008054	
धर्मपाल आर्य	विनय आर्य	एस.के. शर्मा	अजय सहगल
प्रधान	महामंत्री	महामंत्री	सचिव
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा		आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा	

युवा शक्ति के चरित्र निर्माण हेतु इस विशाल शिविर में सहयोग हेतु (आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश) के नाम नकद, चेक या यूनियन बैंक खाता संख्या 520101253203127, IFSC Code UBIN0901415 शाखा कनॉट प्लेस में सीधे जमा कराकर 9899008054, 9990232164 पर सूचित कर रसीद अवश्य प्राप्त करें।

प्रतिष्ठा में,

देश और समाज विभाजन के षड़यन्त्र का पर्दाफाश

आओ! जानें मनुस्मृति का सच

स्वाध्याय के लिए प्रक्षेप रहित संस्करण

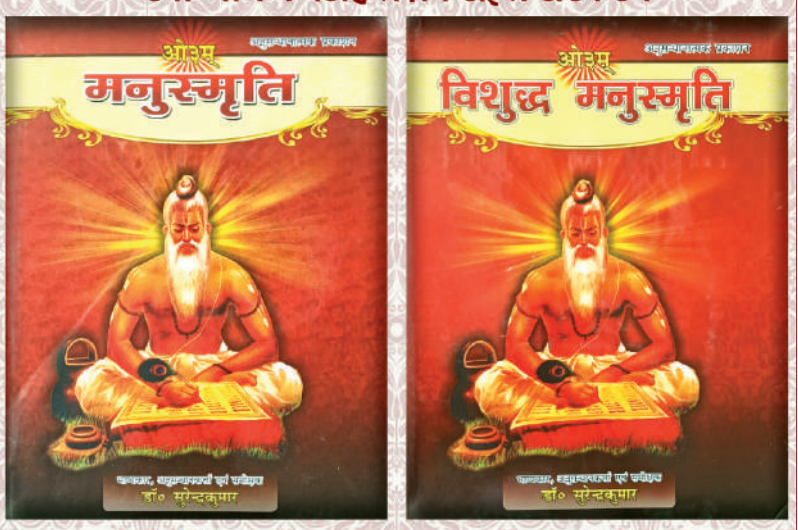

मूल्य : ~~600/-~~ 500/- मूल्य : ~~400/-~~ 300/-

मनु के मौलिक आदेशों-उपदेशों का प्रसंगबद्ध वर्णन होने से स्वाध्यायशील महानुभावों के लिए परम उपयोगी।

प्रकाशकः- आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427 मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph : 011-43781191, 09650522778
E-Mail : aspt.india@gmail.com

प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें
वैदिक प्रकाशन, 15 हनुमान रोड,
नई दिल्ली-1, मो. 9540040339

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व संपादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्पेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001, फोनः 23360150, 23365959, E-mail : aryasabha@yahoo.com, Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
● सम्पादकः धर्मपाल आर्य ● सह सम्पादकः विनय आर्य ● व्यवस्थापकः शिवकुमार मदान ● सह व्यवस्थापकः आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह